

to go into policy matters. I shall abide by your directive. I was not meaning any disrespect to any hon. member.

MR. SPEAKER : He may answer the other part of the question.

SHRI S. K. TAPURIAH : The rule does not say he should cast aspersions.

SHRI DINESH SINGH : So far as the question is concerned, my colleague has gone into certain details and explained that we do not have power to take over the plantations, that we are not proposing to bring any legislation to take over the plantations. Where does this question arise? That was my whole point. Suratgarh Farm is a farm and is being dealt with by another ministry. The hon. member knows very well that it is being dealt with by another ministry. What was the point in relating it to this question? We have explained that we do not have the legislation at the moment to take over plantations; we are not proposing to bring any legislation.

श्री देवेन सेन : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या चाय का निर्यात घट गया है या नहीं, चाय का उत्पादन घट गया है या नहीं और चाय-बगीचों में काम करने वाले मजदूरों की तादाद घट गई है या नहीं?

SHRI DINESH SINGH : My colleague informed the House just now that the yield of tea has gone up this year.

श्री देवेन सेन : मैंने पूछा है कि क्या चाय का उत्पादन घट गया है या नहीं और क्या चाय-बगीचों में काम करने वाले मजदूरों की तादाद घट गई है या नहीं।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहां तक चाय के बागों में काम करने वाले मजदूरों का ताल्लुक है, उनकी तादाद नहीं घटी है और जहां तक चाय की पैदावार का सवाल है, इस साल आल-टाइम रिकार्ड है—380 मिलियन किलोग्राम की पैदावार हुई है।

SHRI JYOTIRMOY BASU : Some-time ago, Government spent lakhs of rupees and set up a plantation enquiry commission and that commission had

submitted a valuable report. Especially one gentleman, late Mr. Sivaswamy made specific recommendations about sick and unprofitable plantations. May I ask the Government whether they have gone through those recommendations and what steps are taken to implement those recommendations?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : The recommendations are before the Government and it is looking into them. My hon. friend knows about these things, if not a tea planter, he has been himself a very good tea taster in London. We have done a lot to improve tea estates not only in the Eastern region but in South India also.

SHRI HEM BARUA : Is it not a fact that in some areas in Kulu and Kangra Valley tea produced is of inferior quality and is it not also a fact that thousands of maunds of tea are lying there because of some relaxation in the rules of the Plantation Act? Are the Government going to save tea plantations in those area from being closed?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : I require notice.

SHRI HEM BARUAI : Is it not a fact that a committee under the chairmanship of Mr. P. C. Borooah was appointed sometime back to enquire into the problems of tea plantations and to suggest means to encourage the export of tea to foreign countries and if so, what are the problems of the tea industry which the committee had pinpointed in its report?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : Tea plantation industry has got many problems : the question of having new plantations in place of old plantations, supply of fertilisers, insecticides and fungicides; sprinkler irrigation, development of new export markets in the face of competition from other countries, etc. The report has not come yet. It will be considered when it comes.

INDIAN TRADE DELEGATIONS SENT ABROAD

*422. SHRI PREM CHAND VERMA : Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) the number of trade missions sent abroad during the year 1967-68;

(b) the number of trade missions which came from abroad to India during the above period;

(c) the number of trade agreements renewed and the number of fresh agreements concluded;

(d) the increase in trade resulting from the visits of these missions; and

(e) the expenditure in foreign exchange incurred on the trade missions going abroad during the above period?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI MOHD. SHAFI QURESHI): (a) 16 trade missions were sent abroad from India during the year 1967-68.

(b) 18 trade missions came to India during the above period.

(c) 10 Trade Agreements/Arrangements were renewed or extended and 3 fresh Agreements/Arrangements were concluded.

(d) There are a number of factors contributing to the increase or decrease in trade. It is difficult to isolate the effect of visits of the delegations and conclusion of Trade Agreements.

(e) The expenditure in foreign exchange incurred on these Trade Missions going abroad during the year 1967-68 is about Rs. 78,000.

श्री प्रेम चंद वर्मा : मैं यह जानना चाहता हूँ कि विदेशों में हमारे जो ट्रेड हाई कमिश्नर हैं, वे व्यापार को बढ़ाने के बारे में क्या काम करते हैं; किम किम देश में स्थित हमारे ट्रेड हाई कमिश्नर के बारे में सरकार को यह शिकायत मिली है कि वे अपनी जिम्मेदारियों को ठीक तरह से नहीं निभाते हैं और क्या सरकार सब ट्रेड हाई कमिश्नरों के काम में संतुष्ट है, अगर नहीं, तो वह इस सिलसिले में क्या ठोस कदम उठाने जा रही है, ताकि व्यापार को बढ़ाने में मदद मिले।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : हमारे हाई कमिश्नर या एम्बेसीज के साथ कमर्शल

एटेशीज या काउन्सलर होते हैं, जो विजारत और कारोबार बगैरह के काम की देख-भाल करते हैं। हमारे पास जो इत्तिला इस वकत तक आई है, उसके मुताबिक यहाँ से जो ट्रेड मिशन या ताजिरो के डेलीगेशन बाहर जाते हैं, उन की हर मुमकिन मदद की जाती है। हमारे पास इस बारे में कोई शिकायत नहीं आई है।

श्री प्रेम चंद वर्मा : मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ कि 1966-67 में कुल कितनी रकम का माल एक्सपोर्ट किया गया था, उस के मुकाबिले में 1967-68 में ट्रेड मिशनों की कोशिगों से कितनी बढ़ोतरी हो कर कुल कितनी रकम का माल एक्सपोर्ट हुआ है और 1968-69 में ज्यादा माल एक्सपोर्ट हो उसके लिए गवर्नमेंट क्या इन्तजामात कर रही है और इस साल कितने ट्रेड मिशन बाहर भेजने की योजना है?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : पहला सवाल जो है इस का अगर मैं जबाब दूँ तो तकरीबन सारा क्वेश्चन अवर उमी में खर्च हो जायेगा। अगर मुअज्जिज मेम्बर साहब चाहें..... (ब्यवधान)।

श्री हुकम चन्द कछवाय : टालिए मत जबाब को। (ब्यवधान)

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : I have the figures. I will take country-wise.

MR. SPEAKER : No, no. You can place it on the Table of the House. You said the whole Question Hour will be taken up by you if you were to give the details.

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : I will have to give the details of each country.

श्री प्रेम चन्द वर्मा : मैंने टोटल एमाउंट पूछा है, उस से मालूम हो जायेगा कि बढ़ा है या घटा है।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : तमाम कन्ट्रीज के आंकड़े तो मैं नहीं दे सकता लेकिन कुछ कन्ट्रीज के आंकड़े मेरे पास मौजूद हैं। बल्गेरिया

की ट्रेड फिगर अगर आप लें तो 1963 में 33 मिलियन वहां पर एक्सपोर्ट था और अब की एक्सपोर्ट बढ़ के 165 मिलियन हो गया है। इसी तरीके पर चेकोस्लोवाकिया का एक्सपोर्ट 1963 में 138 मिलियन था और अब की वह बढ़ कर 392 मिलियन तक पहुंच चुका है। इसी तरह जी० डी० आर०, हंग्री, पोलैंड, रूमानिया, यूगोस्लाविया, यू० ए० आर०, अल्जीरिया, अदन, ईराक इन तमाम कन्ट्रीज के आंकड़े मेरे पास हैं। मैं यह आंकड़े टेबल पर रख दूंगा।

श्री प्रेम चन्द वर्मा : सवाल के बाकी हिस्से का जवाब दे दीजिए। उसका जवाब नहीं दिया।

वाणिज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : अध्यक्ष महोदय, जहां तक पहला सवाल माननीय सदस्य का था, आम तौर पर मेरे साथी ने कहा है, वह आंकड़े आप ने उन को आज्ञा दी है, वह सदन के पटल पर रखेंगे, लेकिन मोटे तौर पर मैं बता दू कि पिछले साल के पुकाबिले में इस साल लगभग 7 परसेंट की वृद्धि हमारे एक्सपोर्ट में हुई है। जहां तक उन्होंने कहा है कि कितने और ट्रेड मिशन इस साल जायेंगे तो अभी हम कह नहीं सकते हैं कि कितने ट्रेड मिशन हम को भेजने की जरूरत होगी। सदन इस को समझेगा कि कुछ तो ट्रेड मिशन जाते हैं जो कि हमारे ट्रेड ऐग्रीमेंट होते हैं उनके बारे में बात करने और कुछ और हम को ट्रेड मिशन भेजने पड़ते हैं कुछ खास मीके पर कुछ खास चीजें बेचने के लिए। पिछले मर्तबे जब कि अरब और इजरायल में झगड़ा हुआ था उस के बाद हम ने ट्रेड मिशन कुछ भेजे थे अरब मुल्कों में जिस से कि उन को सामान खरीदने में सुविधा हो। ऐसे ट्रेड मिशन के बारे में पहले से नहीं कह सकते हैं कि कितने भेजे जायेंगे। यह तो जैसी आवश्यकता होती है जिस चीज को बेचने में उसी हिसाब से भेजे जाते हैं।

श्री रवि राय : क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि कुछ दिन पहले महीदा के नेतृत्व में 4 कांग्रेसी सदस्य पूर्वी अफ्रीका गए थे अनौपचारिक ढंग से एक प्रतिनिधि-मंडल ले कर के और वह जब वहां गए तो उनके पास बिल चुकाने के लिए विदेशी मुद्रा नहीं थी तो इस प्रतिनिधि-मण्डल में कौन-कौन थे और पी० फार्म किस ने दिया तथा बिल चुकाने के लिए पैसा किसने दिया ?

श्री दिनेश सिंह : अध्यक्ष महोदय, मुझे इस के बारे में जांच करनी पड़ेगी। आप चाहें तो मैं जांच कर के मदन को दे दूंगा।

श्री मधु लिमये : आप को पता नहीं है इसका ? सद्भाव और व्यापार बढ़ाने के लिये गए थे। (व्यवधान)।

MR. SPEAKER : Order, order. They saw me also. I need not answer the question.

SHRI N. K. SOMANI : The selection of members for the various trade delegations is made on all considerations except merit with the result that whatever reports they submit on their arrival back are of a mediocre quality and, what is worse, even on those reports there is absolutely no feedback and follow-up on behalf of the Government of India. In view of this, may I know whether the Government has set up any Organisation to review the progress on various matters after the arrival of these trade teams ?

SHRI DINESH SINGH : The hon. Member knows that some of these trade delegations are sent on a governmental basis. They go to examine our trade relations with those countries. They submit their reports and they are gone into in great detail. I am happy to say that I cannot agree with the hon. Member that these reports are valueless. So far as trade missions in which trade also participate are concerned, we consult the Export Promotion Council. It is not as if we arbitrarily select some people. It is done by the Trade Promotion Councils and, as the hon. Member knows very well, when they recommend something in their report, it is

considered and implemented wherever possible.

SHRI P. GOPALAN : We are having trade representatives and Attaches in our embassies in foreign countries to promote our trade with those countries which entails a huge expenditure. Yet, our government is occasionally sending trade missions to foreign countries. Does it mean that our trade representatives and other trade officials attached to our Embassies have failed in their duties? If so, is it not time to wind up such establishments?

SHRI DINESH SINGH : They are two entirely different functions. The trade representatives in our diplomatic missions have different functions to perform from the trade missions that go from here. Our trade representatives are officials looking after our continuing interests, sending information, intervening on our behalf and on behalf of our trade, whenever necessary. The trade missions go either to discuss trade agreements or to promote trade in certain aspects. This cannot be done by the resident people there.

SHRI K. NARAYANA RAO : May I know whether the exchange of trade missions have resulted at least in finding certain markets, some openings, for the new products for export purposes?

SHRI DINESH SINGH : Yes, Sir.

SHRI BAL RAJ MADHOK : In view of the fact that the increase in trade, which the hon. Minister referred to just now, has taken place mainly in the case of the East European countries and Russia, and that too because they have accepted rupee payment, because of which they are purchasing a large number of our goods at cheap rates and then those goods are re-routed to other countries whereby our trade is being adversely affected with those countries, in view of this fact, may I know if this kind of thing will be stopped and that political considerations will be kept in the background and the commercial and economic interest of the country will be kept uppermost in entering into trade relations with other countries? Secondly, is it a fact that most of the Trade At-

taches in our Embassies are people who have nothing to do with trade and, therefore, they cannot serve the purpose for which they are appointed? So, may I know whether any step has been taken to see that people who have real understanding of commerce and trade are appointed as trade representatives?

श्री दिनेश सिंह : जहां तक माननीय-सदस्य का पहला सवाल है

कुछ माननीय सदस्य : अंग्रेजी में बोलिए ।

MR. SPEAKER : He put the question in English.

श्री दिनेश सिंह : अध्यक्ष महोदय, आप ने इतना रूपया खर्च कर के ट्रांसलेशन की सुविधा प्रदान की है। माननीय सदस्य हिंदी में बोल सकते हैं तो मैं भी हिन्दी में बोल सकता हूँ।

जहां तक कि उनका पहला सवाल था कि जो हमारा ऐग्रीमेंट है पूर्वी यूरोप के देशों के साथ, मैं नहीं समझता हूँ कि उन से किसी तरह से कोई नुकसान हो रहा है। बल्कि उस से हमारे निर्यात में बहुत बढ़ती हुई है। जो हम से सामान ले कर कहीं और बेचने की बात माननीय सदस्य ने कही जिस को कि स्विच ट्रेड कहते हैं उसकी कुछ कभी-कभी शिकायतें आती हैं। सोवियत रूस से कोई शिकायत नहीं आई, कुछ और देशों से आई थी, उस की हमने जांच की, जहां पर जो आवश्यकता पड़ी, उसकी हमने व्यवस्था की। लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि इस की वजह से कोई मुमानियत नहीं है। ऐसी बात नहीं है कि और देशों को सामान नहीं बेच सकते हैं, वहां नहीं बेच पाते हैं, तब उसको इधर बेचने की कोशिश करते हैं। इससे हमारा निर्यात बढ़ता है। मैं समझता था कि माननीय सदस्य इस में तारीफ करेंगे कि अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन उन्होंने इस को भी शिकायत में शामिल कर लिया।

जहां तक दूसरे सवाल का सम्बन्ध है, मैं यह कहना चाहता हूँ कि आम तौर से जितने हमारे व्यापार सम्बन्धी कार्यकर्ता हैं, जो हमारे विदेशी मिशनों में हैं, वे सब गवर्न-

मेंट के अफसर होते हैं और सभी देशों का ऐसा ही नियम है। बल्कि माननीय सदस्य अगर उस रिपोर्ट को देखें, जो ब्रिटिश-फौरन सर्विस ने कुछ महीने हुए निकाली है; उस में उन्होंने कहा है कि इस तरह की जितनी बाहर के मिशनों की सर्विसें हैं, उन सब जगहों को फौरन-सर्विस के लोगों से ही मैन करना चाहिये। इस लिये मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह जरूरी नहीं है कि व्यापारियों को हम वहां रखें, वहां पर हमारे व्यापार को बढ़ाने के लिये हमारे कर्मचारी भी मदद कर सकते हैं।

श्री शिव चन्द्र झा : क्या इधर हाल में कोई इंडियन ट्रेड मिशन फर्टीलाइजर खरीदने के लिये जापान गया था ? यदि गया था, तो उस ने कौन-सा एग्रीमेंट किया है, किन शर्तों पर कितना फर्टीलाइजर खरीदा जायेगा और उस पर कितना फॉरन एक्सचेंज खर्च होगा।

श्री दिनेश सिंह : जहां तक खाद का सवाल है, हमारी तरफ से कोई ट्रेड मिशन वहां गया हो—ऐसी कोई मूचना मेरे पास नहीं है। यदि खाद्य मंत्रालय या पेट्रोलियम मंत्रालय की तरफ से गया हो, तो मुझे पता लगाना पड़ेगा।

SHRI D. C. SHARMA : Sir, I am very happy to hear that we are having very good trade with the East European countries which are Communist countries. May I ask the hon. Deputy Minister whether any attempt has been made to export goods other than primary goods, semi-processed goods and traditional goods to the West European democracies like England, France and other countries ?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : We have made efforts to shift from the traditional to non-traditional exports, and I can inform this House that against global tenders we have been successful in achieving certain very good results. We have succeeded in getting orders for

non-traditional goods from West European countries also.

श्री श्रीचन्द्र गोयल : हमारे यहां से जो ट्रेड मिशन विदेशों में जाते रहे हैं, उनकी असफलता आज एक मानी हुई बात है। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि दिल्ली के अन्दर पिछले लगभग महीने डेढ़ महीने से जो बहुत बड़ा सम्मेलन "अनटाइड" के नाम से चल रहा है, क्या उसका लाभ उठा कर किसी प्रकार के ट्रेड एग्रीमेंट्स दूसरे देशों के साथ किये गये हैं। वजाय इस के कि हमारे मिशनज वहां जा कर प्रयत्न करें, इस अवसर का हम ने क्या लाभ उठाया है, कितने ट्रेड एग्रीमेंट्स भारत के हित में किये हैं इन विदेशों से आये हुए व्यापारियों के साथ ?

श्री दिनेश सिंह : आप जानते हैं कि अभी वह सम्मेलन चल रहा है, उस से क्या फायदा होगा, इस के लिये मैं अनुरोध करूंगा कि सम्मेलन के खत्म होने तक प्रतीक्षा करें। जो भी फायदा होगा, वह सदन के सामने आ जायेगा।

जहां तक ट्रेड एग्रीमेंट्स का सवाल है, कुछ देशों के साथ, जिनके प्रतिनिधि यहां पर आये हुए हैं, हमारी बातचीत चल रही थी और उस के फलस्वरूप कुछ ट्रेड एग्रीमेंट्स पर दस्तखत हुए हैं।

WORKING OF STEEL PLANTS AT ROURKELA, BHILAI AND DURGAPUR

*424. **SHRI SITARAM KESRI :** Will the Minister of STEEL, MINES AND METALS be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Steel Plant at Bhilai had incurred a huge loss during the year 1966-67 and if so, the amount thereof;

(b) whether the Steel Plants at Rourkela and Durgapur also incurred loss during the above period;

(c) whether working of these Plants will not affect the repayment of loans; and

(d) whether the causes for the loss have been examined and if so, the steps taken in the matter ?